भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

प्रेस रिलीज़

तारीख़: 9 फ़रवरी, 2026.

वामपंथी लफ़्फ़ाज़ दक्षिणपंथी अवसरवादी राजू उर्फ़ KP का भंडाफोड़ करें !
पार्टी विरोधी बलराज के विघटनकारी खेमें के ख़िलाफ़ संघर्ष करते हुए इसके भूमिगत नेट्वर्क का भंडाफोड़ करें !
अवसरवाद विघटनवाद संशोधनवाद को ध्वस्त करें !
मार्क्सवाद लेनिनवाद माओवाद ज़िंदाबाद !

नवंबर 2023 में हमारी पार्टी की पोलित ब्यूरो ने अपने प्रस्ताव में बताया है कि उत्तर भारत के कुछ कामरेडों जिसमें राजू भी शामिल था, ने पार्टी अनुशासन का गंभीर उलंघन किया है, इन कामरेडों ने पार्टी विरोधी ग़द्दार बलराज के साथ बैठक भाग लिया. साथ ही इसी प्रस्ताव में अपील की गई कि ग़द्दार बलराज द्वारा आयोजित बैठक में शामिल होने वाले साथियों को इस अनुशासनहीनता पर आत्मालोचना पेश करनी चाहिए. जब इस प्रस्ताव के बारे में राजू उर्फ़ केपी से चर्चा की गई तो, आत्मालोचनात्मक होने की बजाय इन्होंने एकता प्रक्रिया के लिए पहलकदमी लेने वाले साथियों के ख़िलाफ़ ही दूष्प्रचार करना शुरू कर दिया. बार-बार अपील करने के बाद, इन्होंने कमेटी के सामने अपना आत्मालोचना पत्र पेश किया, परंतु ये इस पत्र में आत्मालोचना रखने की बजाय केवल एक ही वाक्य रटते रहे कि बैठक में हिस्सा लेना ग़लत था. इनके द्वारा अपने इस पत्र में बलराज की ना तो कोई राजनीतिक आलोचना पेश की गई और ना ही बलराज के साथ संबंध विच्छेद करने का कोई वायदा किया गया.

राजू उर्फ़ केपी अपनी तथाकथित आत्मालोचना पेश करने के नाम पर पार्टी विरोधी ग़द्दारी को मज़बूत करने का काम कर रहा है. जब हमारी कमेटी इन्हें मिलने के लिए बुला रही थी, तो इन्होंने मिलने से मना कर दिया. वह चिंघाड़ मारता है कि वह भूमिगत पार्टी निर्माण के लिए है. वह कामरेड लेनिन के नाम की भी शपथ लेता है. परंतु इस लफ़्फ़ाज़ी के दौरान, वह गुपचुप ढंग से खुली और क़ानूनी ज़िंदगी ही जी रहा है, वह ना तो भूमिगत पार्टी कमेटी यानी उच्चतर कमेटी के साथ तालमेल करता है, ना ही वह साथ काम कर रहे युवा कामरेडों को भूमिगत होने के लिए बोलता है और ना ही भूमिगत पार्टी कमेटी का निर्माण करता है. वामपंथी लफ़्फ़ाज़ी को एक तरफ़ रखते हुए अब उसके व्यवहार को देखते हैं:- यह एक क़ानूनी, उदार निम्न पूँजीपति वर्गीय तत्व है जिसके पास बिना किसी कार्यक्रम और रणनीति-कार्यनीति वाला एक ढीला-ढाला ढाँचा है. इस प्रकार राजू उर्फ़ केपी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के भेष में एक निम्न पूँजीपति वर्गीय तत्व बन गया है.

राजू उर्फ़ केपी समझ रखता है कि एकता कांग्रेस-नौवीं कांग्रेस में निर्धारित केंद्रीय कार्यभार की अवधारणा ग़लत है क्योंकि वह कहता है कि छापामार क्षेत्रों व छापामार आधार क्षेत्रों को आधार क्षेत्रों में, पीएलजीए को पीएलए में और छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में तब्दील करने का केंद्रीय कार्यभार लेने के कारण पार्टी शहरी और मैदानी क्षेत्रों के आंदोलन पर

ध्यान नहीं दे पाई. उसकी यह समझदारी बलराज जैसी ही है. यह बलराज की लाइन ही है. यहीं ग़द्दार बलराज द्वारा आयोजित पार्टी विरोधी बैठक में राजू उर्फ़ केपी की मौजूदगी का एक स्पष्ट कारण है. इनके द्वारा लिया गया यह स्टैंड उनको चीन के रास्ते और मालेमा विरोधी में तब्दील कर देता है. कई सालों से राजू उर्फ़ केपी की समझदारी बन गई है कि पंजाब में भूमिगत होकर काम करना संभव नहीं है. इसके ठीक विपरीत तथ्य यह है कि हमारी पार्टी पंजाब समेत मैदानी इलाक़ों में कामकाज को पुन: संगठितीकरण करने की सैद्धांतिक और व्यवहारिक तौर पर ठोस समझदारी पेश कर रही है.

राजू कह रहा है कि पार्टी का जाति के सवाल पर हालिया दस्तावेज में अंबेडकर पर स्टैंड सही नहीं है. वह मानते हैं कि अंबेडकर मार्क्सवाद विरोधी हैं. जबकि हम अंबेडकर पर हमारी केंद्रीय कमेटी द्वारा लिए गए स्टैंड को बार-बार दुहरा रहे हैं. मज़दूरों के लिए काम करने वाले अंबेडकर एक यथार्थवादी थे. वे संशोधनवादी सीपीआई के ब्राह्मणवादी व्यवहार के ख़िलाफ़ थे और उन्होंने साम्यवाद का मौटे तौर पर समर्थन किया था. उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी जाति उन्मूलन के लिए समर्पित कर दी. इसीलिए हमारी पार्टी उन्हें एक जनवादी ताक़त के रूप में मानती है जो कम्युनिस्टों के प्रति दोस्तीपूर्ण थे. राजू उर्फ़ केपी अंबेडकर के प्रगतिशील पहलू को नहीं देख पा रहे हैं. इस प्रकार, वह ऐसी समझदारी पेश कर रहे हैं जो उनको जनता से काट दे रही है. यह जातिवाद के ख़िलाफ़ जनता के संघर्षों को दरकिनार करने का भी एक प्रयास है. यह अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों में जन विरोधी सारतत्व का एक और उदाहरण है. उनकी यह अस्थिरता सिद्धांत और कार्यनीति दोनों में देखने को मिलती है.

राजू उर्फ़ केपी के अवसरवाद का एक और ज़रूरी पहलू है कि वे तालमेल को एक समस्या के रूप में पेश करते हैं. इस मामले में आज के समय के अवसरवादी तत्वों का भी यहीं हाल है. वे एक ना एक तरीक़े से कहते हैं कि भूमिगत पार्टी कमेटी (NCC) के साथ तालमेल करना संभव नहीं है. वे क्यों पार्टी के साथ तालमेल नहीं करना चाहते? पार्टी के साथ तालमेल करने से इंकार करने का पहला और बुनियादी कारण उनका निम्न पूँजीपति वर्गीय चरित्र ही है. कामरेड लेनिन ने इसके कारण की व्याख्या की है. उन्होंने कहा कि "मुख्य कारण बुद्धिजीवी और निम्न पूँजीपति वर्गीय तत्वों का ढुलमुलपन है, जिससे सर्वहारा वर्ग की पार्टी को छुटकारा पा लेना चाहिए, वे तत्व प्रतिक्रियावाद के दौर में नहीं टिक पाए जो मुख्यतः बुर्जुआ जनवादी क्रांति की जल्दी विजय की उम्मीद के साथ सर्वहारा वर्गीय आंदोलन में शामिल हुए थे. उनकी अस्थिरता सिद्धांत ("क्रांतिकारी मार्क्सवाद से वापसी") और कार्यनीति ("नारों के स्तर को कमजोर कर देना") तथा पार्टी संगठन में साफ़ दिखती है. एक डरा हुआ निम्न पूँजीपति वर्गीय बुद्धिजीवी अपने सिद्धांत, राजनीति और संगठन निर्माण की क्षमता पर सफ़ेद आतंक के प्रभाव को छिपाने के क्रम में तालमेल करने से इंकार कर देता है." राजू उर्फ़ केपी ने खुद कहा है कि राजकीय दमन के कारण भूमिगत पार्टी के साथ तालमेल करना संभव नहीं है. यदि 1908-1914 के दौरान रुस की बोल्शेविक पार्टी के कार्यकर्ता पार्टी नेतृत्व और केंद्रीय कमेटी से तालमेल तोड़ लेते तो रूसी क्रांति का सफल होना संभव नहीं था. यदि 1930 में सेटबैक के दौरान चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का आपस में तालमेल टूट जाता तो चीनी क्रांति भी नहीं हो पाती. राजू उर्फ़ केपी यह जानते हैं. परंतु वह केवल इसीलिए इंकार कर रहे हैं क्योंकि वह उस पार्टी में रहना नहीं चाहते जो राजसत्ता दख़ल के लिए दीर्घकालीन लोकयुद्ध के ज़रिए छापामार क्षेत्रों, छापामार आधार क्षेत्रों, आधार क्षेत्रों और मुक्त क्षेत्रों का निर्माण करने में लगी हुई है.

हरेक पार्टी सदस्य को अगस्त 2024 का पोलित ब्यूरो प्रस्ताव आत्मसात् करने की ज़रूरत है. पोलित ब्यूरो प्रस्ताव बताता है कि पार्टी कमेटियों के बीच में तालमेल करना बहुत महत्वपूर्ण है. पार्टी ढाँचों के बीच तालमेल बनाए रखना और आत्मगत शक्तियों को विकसित कर भूमिगत पार्टी निर्माण का कार्यभार हरेक पार्टी सदस्य का बनता है. बढ़ते दमन और भगवा आतंक के समय में तालमेल करना पहले से और ज़्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि अब हमारी आत्मगत शक्तियों को ताक़त हासिल कर और अधिक शक्ति बल के साथ पलटवार करने की आवश्यकता है. तालमेल नहीं करना अवसरवादियों के हाथों का एक यंत्र बन गया है, ऐसा करके वे सुरक्षित ढंग से अपनी राजनीतिक लाइन को रखने और अपने संगठन को पार्टी में मिलाने से बच सकते हैं. यदि वे पार्टी के साथ तालमेल नहीं करते हैं तो वे अपनी अवसरवादी लाइन लागू कर सकते हैं. ऐसे अवसरवादियों से हम कहना चाहते हैं कि अभी के लिए आप अपनी अवसरवादी-

विघटनवादी-संशोधनवादी लाइन को व्यवहार में लागू करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं, लेकिन ऐसा करने की अनुमति हम सर्वहारा वर्ग की हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के नाम पर नहीं देंगें.

राजू उर्फ़ केपी एक धूर्त अवसरवादी हैं जो लीन प्याओ द्वारा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और कामरेड माओ के ख़िलाफ़ अपनाई गई पद्धति का इस्तेमाल कर रहे हैं. वह साज़िश और षड़यंत्र करता है. वह पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच पार्टी नेतृत्व और केंद्रीय कमेटी के ख़िलाफ़ मतों का निर्माण करता है. वह पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता को भ्रमित करने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करता है. उसकी सभी धूर्त ब्राह्मणवादी कार्यनीति का अब भंडाफोड़ हो चुका है. एक हद तक ही आत्मालोचना स्वीकार करना उसकी इसी प्रकार की एक और कार्यनीति है. वह अपने अवसरवाद को छिपाने के लिए, सिर्फ़ शब्दों में एक हद तक आत्मालोचना स्वीकार करता है. राजू जैसे अवसरवादियों के लिए आत्मालोचना पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच अपने प्रभाव को बरकरार रखने मात्र के लिए है. उसने पूरी ज़िंदगी में किसी भी गलती पर कभी भी सही मायने में आत्मालोचना पेश नहीं की. उसका पहले का महिला विरोधी आचरण, पार्टी ढाँचों में शराब संस्कृति को बढ़ावा देना और कामरेडों व जनता के साथ डिलिंग के सामंती नौकरशाही तौर-तरीक़े इसमें शामिल है. वास्तव में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 2016 में पंजाब की राज्य कमेटी में फूट डालने का काम राजू उर्फ़ केपी द्वारा ही अंजाम दिया गया था. इस प्रकार, पार्टी के लिए और जनता के आंदोलन के लिए इस विघटनकारी जन विरोधी तत्व से छुटकारा पा लेना ज़रूरी है.

इन सबको मद्देनज़र रखते हुए यह स्पष्ट है कि राजू उर्फ़ केपी ने हमारे साथ तालमेल करने के लिए इंकार कर दिया है क्योंकि वह हमारी पार्टी लाइन के समांतर एक लाइन लिए हुए है और बलराज के साथ राजनीतिक और सांगठनिक रूप से संबंध सही सलामत रखें हुए है. वह ग़द्दार बलराज की राजनीतिक लाइन को लागू करने के लिए काम कर रहा है. इसीलिए, हमारी पार्टी, पार्टी संविधान की धारा 27 (अ) के तहत इनकी पार्टी सदस्यता को ख़ारिज कर निष्कासित करती है. हम उसके अंतर्गत सक्रीय PLT/SOC को भंग करते हैं और सभी पार्टी कार्यकर्ताओं से आह्वान करते हैं कि राजू उर्फ़ केपी खेमें को छोड़कर पार्टी के क्रांतिकारी संघर्ष में शामिल हो जाएँ और सक्रियता से अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष करें.

जारीकर्ता:
उत्तर तालमेल कमेटी
भाकपा (माओवादी)